

कात्परोऽनुस्वारः *wenn kein Anunāsika da ist, so folgt Anusvāra* P. 8, 3, 4; die Scholien fassen परः als nom. — Vgl. परःकृत् u. s. w., परःशत u. s. w., परःसकृत् u. s. w., परोन्त u. s. w., पर, परा und प्र.

परसंचारक (पर + सं०) m. pl. N. pr. eines Volkes VP. 193, N. 125.

परसंज्ञक (पर + संज्ञा) m. die Seele ÇABDAR. im ÇKDR.

परसवर्णा (पर + स०) adj. mit dem nachfolgenden Laute homogen P. 8, 4, 58.

परसस्थान (पर + स०) adj. f. या dass. VS. PRĀT. 4, 9. AV. PRĀT. 2, 31 in Ind. St. 4, 215 (°सस्थाम् gedruckt).

परसात् (von पर) adv. in die Hände eines Andern: (उद्धिता) परसा-  
कृता so v. a. einem Manne gegeben, verheirathet Spr. 931.

परसामन् s. u. परःसामन्.

परसेवा (पर + सेवा) f. Fremddienst KATHĀS. 36, 74.

परस्तरम् (von परस्) adv. weiter weg: तेन गच्छ प० RV. 10, 153, 3.

परस्तराम् adv. dass. AV. 5, 22, 7. 30, 9. मुञ्चन्त्यामूः सेना श्रुमित्राणां  
प० 6, 67, 1. प० प० immer weiter PANĀV. Br. 17, 14, 3.

परस्तात् (von परस्) adv. praep. (mit dem gen.) P. 5, 3, 29. VOP. 7, 104.

1) jenseits, darüber hinaus, weiterhin, hinwärts (Gegens. अथस्तात्, अर्वाक्): परिं पूषा परस्ताद्भस्त् दधातु दन्निषाम् RV. 6, 54, 10. ÇAT. Br. 3, 7, 2, 13. यो रोचने परस्तात्सूर्यस्य RV. 3, 22, 3. यो मङ्किसा परिक्रुवोर्वी उतावस्ताडुत देवः परस्तात् 10, 88, 14. यो ध्यामति संपत्परस्तात् AV. 4, 16, 4. 6, 73, 3. भयं परस्तादभयं ते अर्वाक् 8, 1, 10. TBR. 1, 3, 1, 1. 3, 4. रजसः परस्तात् AV. 13, 2, 8. TBR. 3, 1, 2, 8 in Z. f. d. K. d. M. 7, 273. स्वस्ति वः पाराय तमसः परस्तात् MUND. UP. 2, 2, 6. BHAG. 8, 9. MBH. 3, 1712. रात्रीमिवाव-  
स्तात्कुरुते ऽहः परस्तात् AIT. Br. 3, 44. ततः परस्ताद्योगेश्वरगतिं विप्रु-  
हामुदाहरति BHĀG. P. 5, 20, 42. 4, 12, 34. über höher als: क्रातासंमिश्र-  
देहो ऽप्यविषयमनसां यः (शिवः) परस्ताद्यतीनाम् MĀLAV. 1. — 2) vom  
ferner Liegenden an, von oben, von vorn oder von hinten: परस्तादर्वा-  
कप्रवृणीति ÇAT. Br. 1, 4, 2, 4. 3, 3, 1, 1. 1, 9, 3, 10. तान्परस्तात्प्रतिलोमं प्र-  
त्यैत् von hinten 11, 4, 3, 7. 12, 4, 4, 2. AIT. Br. 1, 25. तामात्मा परस्तान्नि-  
ह्यातिष्ठत् vorn den Weg vertretend 8, 19. — 3) weiterhin, abseits  
परस्ताडुल्मुके निर्धाति ÇAT. Br. 2, 4, 2, 14. KAUC. 128. परस्तात्पवित्रस्य  
unter (nach dem Comm.) TBR. 1, 4, 1, 1. — 4) nachher, später RV. 10,  
129, 5. M. 2, 74 (Gegens. पूर्वम्). MBH. 1, 3616. RV. PRĀT. 13, 5. परस्ता-  
द्वगम्यत एव was da folgt, erräth man schon ÇĀK. 13, 4. ङ्रसः परस्ता-  
त् nach AV. 6, 122, 1. 4. एतावतः कालस्य प० ÇAT. Br. 10, 6, 5, 4. संव-  
त्सरस्य प० 8. AIT. Br. 2, 33. तं परस्ताडुकथानां पर्यस्य शंसति 4, 1. पर-  
स्तादायुषः KHĀND. UP. 2, 24, 6. स्थान्नु परस्तात्कल्पवासिनाम् BHĀG. P. 4,  
9, 20. seither (?) यः परस्ताद्दाम्यवादी स्यात् TS. 2, 3, 1, 3.

परस्त्री (पर + स्त्री) f. eines Andern Weib, aber auch ein unverheira-  
thetes Mädchen, das einem Andern (vom Vater u. s. w.) abhängig ist  
SĪH. D. 49, 151; vgl. 43, 3. In Derivaten werden die Vocale beider Glie-  
der verstärkt nach gaṇa अनुगतिकादि zu P. 7, 3, 20.

परस्प (परस् + प) 1) adj. schützend; s. परस्पव. — 2) n. Schutz: लत्र-  
स्य वा परस्पाय ब्रह्मणास्त्वन्ं पाहि VS. 38, 19. — Vgl. परस्या.

परस्पव (von परस्प 1.) n. Schutz ÇAT. Br. 14, 3, 1, 9.

परस्पर (परस्, erstarrter nom. m. sg. von पर, + पर) in den obliquen  
Casus des sg. m. und in der adv. Form auf तस्. Einer den Andern u.

s. w. 1) acc., zugleich adv. einander, mit einander, gegen einander, un-  
ter einander, zu einander, gegenseitig H. 1499. HALĀJ. 4, 35. परस्परं भा-  
वयन्तः BHAG. 3, 11. 10, 9. MATSĀP. 35. HIP. 4, 38. MBH. 12, 2362. SUND.  
4, 15. VARĀH. BRH. S. 54, 13. PANĀT. 116, 1. परस्परं विनिवृत्त्यः (fem.)  
R. 1, 9, 16. 6, 74, 42. ÇĀK. 17, 4. 33, 10. 103, 17. परस्परमिवाचव्युस्तदा-  
गमभयं दिशः KATHĀS. 19, 66. गुरुवच्च स्तुषावच्च वर्तेयातां परस्परम् M. 9,  
62. न भिद्यते परस्परम् MBH. 1, 7421. RAGH. 12, 94. परस्परं च मोक्षानि  
भक्तयति MĀRK. P. 14, 80. मन्त्रयतः PANĀT. 9, 20. KATHĀS. 34, 242. संयुक्तौ  
VARĀH. BRH. S. 78, 16. PANĀT. II, 136. समस्तमप्येतस्सगतपरस्परं भक्त-  
णार्थं सामादिभिरूपयैस्तिष्ठति 31, 17. भार्यास्तु धातृवर्गस्य यातरः स्युः प-  
रस्परम् AK. 2, 6, 1, 30. H. 514. HALĀJ. 2, 353. परस्परं सर्वांसिज्ञौ न भवतः  
KĀC. zu P. 1, 1, 10. वाच्यौ नटीसूत्रधारार्यानाम्ना परस्परम् BHAR. zu ÇĀK.  
1. परस्परं विवदमानानामपि धर्मशास्त्राणाम् HIT. 19, 21. भेदाः परस्परम्  
BHART. 1, 99. परस्परं यो भवत्यप्येकारः AK. 2, 8, 2, 70. परस्परमुभयोरस-  
न्वधात् P. 8, 3, 44. Sch. परस्परं कटातनिरिज्ञाणं संज्ञातम् VET. in LA. 7, 2,  
23, 18. 24, 8. — 2) instr.: परस्परैणाविरुद्धाः R. 1, 7, 8 (11 GORR.). संगम्य  
5, 3, 22. विज्ञातः RAGH. 4, 79. प्रीतिः MBH. 1, 753. भेदः 7421. विरोधः  
RAGH. 6, 46. परस्परैण स्पृहणीयशोभम् 7, 14. ततयोः 50. — 3) abl.:  
क्रोधो हर्षो विषादश्च जायते ह परस्परान् MBH. 12, 7714. 10724. — 4)  
gen.: (ये) परस्परस्य मुह्यतः MBH. 5, 3132. 13, 273. सद्दशौ R. 1, 48, 5. अ-  
नुमते M. 8, 358. दारेषु 10, 29. अन्तरमीतमाणयोः MBH. 8, 4631. उपरि  
RAGH. 3, 24. 7, 35. PANĀT. III, 200. — 5) adv. °तस्. Einer durch den  
Andern: प्रीतिौ N. 5, 33. — 6) am Anfange eines comp. ohne Suffix:  
परस्परदिनः M. 12, 59. °विरुद्धानाम् 7, 152. °पराहृत AK. 1, 1, 5, 20.  
H. 265. °विल्लनणाः SĀMĀK. 36. परस्परैरुत्पीडन R. 1, 20. परस्पर-  
क्रान्दिनि चक्रवाकयोः — मिथुने KUMĀRAS. 5, 26. °हृताः N. 13, 11. परस्पर-  
रालिङ्गितयोः VID. 302. °सुखैषिणौ N. 24, 45. °कृते रताः R. 1, 19, 23.  
परस्परान्तिमादृश्यम् — पश्यन्तौ RAGH. 1, 40. °निरतौ MĀRK. P. 54, 22.  
°विरोध MADHUS. in Ind. St. 1, 20, 1. °समागमे R. 1, 48, 1. 69. 16. परस्पर-  
राश्रय RAGH. 3, 24. MÜLLER, SL. 196, 1 v. u. SUÇR. 4, 133, 14. 15. SĀM-  
KURJAK. 31. °प्रीति PANĀT. 183, 15. °सख्य HIT. 25, 15, v. l. °विवाद VET.  
in LA. 21, 10. °स्वितौ einander gegenüber stehend RAGH. 11, 82. — Zum  
Schlusse geben wir noch einige Stellen, in denen das Wort in ausser-  
gewöhnlicher Weise gebraucht wird: परस्परः nom. pl. m. wohl Einer  
wie der Andere: वदन्ति MBH. 12, 2420. नान्यं वदभयं पश्ये यत्र मृत्युः प-  
रस्परम् so v. a. wo der Tod Einen nach dem Andern (ereilt) BHĀG. P.  
1, 8, 9. am Ende eines adj. comp.: (अपसर्पैः) अविज्ञातपरस्परैः die sich  
gegenseitig nicht kannten RAGH. 17, 51. als adj. (f. स्त्री) beiderseitig: पर-  
स्परां विस्मयवन्ति लक्ष्मीमालोकायां चक्रुरिवादेरेण BHART. 2, 5; nach  
dem einen Schol., der auch die Lesart परस्परम् erwähnt, adv. — Vgl.  
अपरस्पर, अन्योऽन्य, इतरेतर.

परस्पौ (परस् + पा) m. Beschützer, protegens: वं हृतस्त्वमुं नः परस्पाः  
RV. 2, 9, 2. अर्द्धो गोपा उत नः परस्पाः 6. मुकृते प० 5, 62, 6. 8, 9, 11.  
30, 15. TBR. 2, 8, 1, 3. — Vgl. परस्प.

परस्मैपद (परस्मै, dat. von पर, + पद) n. die auf einen Andern bezüg-  
liche Wortform, so heissen die Personalendungen der activen Verbal-  
form P. 1, 4, 99. 3, 78. pl. 3, 4, 82. Ueber die Bildung des Wortes s. 6, 3, 8.  
— Vgl. आत्मनेपद.